महानता की महीन पुरुषार्थी दादी

एक फुटबॉल टीम के बच्चे एक गुफा में फंस गए थे। वे प्रकृति के सामने इतने बेबस थे, कि बाहर आना तो दूर, बल्कि प्रकाश की एक किरण भी देखने के लाले पड़ गए थे। आप कल्पना करें कि प्रकाश न हो, तो जीवन, जीवन ही नहीं रह जाता। पर इन बच्चों ने गुफा के अंदर छोटी चट्टान के बीच करीब पंद्रह से बीस दिन गुज़ारे, क्योंकि बारिश का मौसम होने के कारण गुफा में पानी भर गया और वे बाहर आ नहीं सके। उनके साथ उनका कोच भी था। कोच कहीं न कहीं ध्यान योग की विधि से मन को परिस्थिति के मुताबिक ढ़ालने की कला में माहिर था। उसने बच्चों का न सिर्फ हौसला बनाये रखा, बल्कि खुद भी हिम्मत नहीं हारी। उस योग के प्रकाश की भीतरी किरण ने ही उन्हें ज़िन्दा रखा और समय रहते वैज्ञानिक तकनीकों के समन्वय से उन्हें सुरक्षित बाहर निकाला जा सका।

- ब्र. कु. गंगाधर

ऐसे ही हमारे जीवन में भी कभी उतार-चढ़ाव आता है। ऐसे में आध्यात्मिक उज्जवल ज्योति की उम्मीद की किरण ही हमें मार्ग दिखा सकती है। ऐसे ही ज़िन्दगी के उतार-चढ़ाव वाले उलझनों के मध्य हमारी दादी प्रकाशमणि ने बहुतों के जीवन को प्रकाश देकर प्रकाशित किया।

पच्चीस अगस्त आते ही दादी जी की मधुर शिक्षायें, उनकी मधुर यादें रील की तरह एक-एक करके अंतर्दृष्टि के आगे सरकती जाती हैं। वह हमारी यादों के बगीचे के फूलों को नई सुंदरता और खुशबू से भर देती हैं। महानताओं के आसमान को छूने के बावजूद भी दादी की सरलता और निरहंकारिता जैसे गुणों ने हमारे हृदय में अपनी अमिट छाप छोड़ी, जो आज भी भुलाये नहीं भूल सकती। ऐसे ही एक लम्हे की बात करें, तो एक बार बारिश का मौसम था। सुबह के समय बारिश ज़ोर से अपना रूप दिखा रही थी, ठण्ड भी लग रही थी। दादी जी क्लास के लिए आईं और भण्डारे वालों को कहा, कि सभी को गरम-गरम हलवा खिलाओ प्रसाद(टोली) में। तुरंत ही क्लास के बाद सभी को गरम-गरम हलवा टोली के रूप में दिया गया। दादी प्रासंगिकता के अनुरूप कार्य करके सबको उमंग-उत्साह दिलाते, सभी के दिल के भाव को समझ लेते, ये उनकी विशेषताओं में शुमार था।

एक बार ठण्ड के मौसम में ज्ञानसरोवर के निर्माण कार्य में दादी जी कार्य स्थल पर पहुँचे, देखा, सारे बड़े प्यार से सेवा कर रहे हैं और ठण्डी भी जैसे इनकी परीक्षा ले रही हो। पर ये खुदाई खिदमतगार, परमात्मा के कार्य में ठण्ड की फिक्र किये बिना जुटे हुए थे। उनको तुरंत ख्याल आया कि सबको गरम-गरम पकौड़े खिलाये जायें। सेवाधारियों द्वारा इसकी व्यवस्था आज्ञानुसार कर सबको गरम-गरम पकौड़े खिलाये गये। दादी जी का ये भाव सबके दिल को छू लेने वाला होता था।

दादी जी हर कार्य को समयबद्ध रूप से करने की हिमायती थीं। जैसे ज्ञानसरोवर का निर्माण कार्य चल रहा था, लेकिन उसकी ओपनिंग डेट पहले से ही फिक्स कर दी गई थी। हमें अच्छी तरह से याद है कि ओपनिंग डेट पर सुबह दस बजे ओपनिंग होनी थी और हार्मनी हॉल के स्टेयर केस का कार्य कड़ाके की ठण्ड के मध्य रात भर चलकर सुबह छः बजे समाप्त हुआ और निश्चित समय पर ही उद्घाटन भी हुआ।

दादी जी निश्चय और निश्चिंतता की धनी थीं। कैसे होगा, कौन करेगा, ऐसी बातें तो उनको कभी छू भी नहीं पायीं। यज्ञ में ज्ञानसरोवर के विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण करना था, पर कैसे होगा, उसके लिए आर्थिक व्यवस्था कैसे कर पायेंगे, इसके लिए भी दादी बिल्कुल निश्चिंत रहती थीं। दादी जी हमेशा कहती थीं, कि मैं तो निमित्त हूँ, उसका कार्य है, और वो ही सबकुछ करवा रहा है। उसमें ज़रा सी भी निश्चय की सुई को हलचल की मार्जिन नहीं होती थी। मैंने दादी जी को प्रेमपूर्वक प्रशासन करते हुए नज़दीक से देखा। कैसे कार्य करना है और किससे करवाना है, दादीजी इन सब चीज़ों का समन्वय बनाकर प्रेम से कार्य को सम्पन्न करती थीं। दादी जी, यज्ञ की कोई भी चीज़ वेस्ट न हो, उसका पूरा ध्यान रखती थीं। हमें याद है कि जब कंस्ट्रक्शन का कार्य चल रहा था, तो पाइप से पानी यूं ही व्यर्थ में बह रहा था। तो दादी जी ने सम्बंधित भाई को बुलाकर उसे तुरंत ठीक करवाया, क्योंकि माउण्ट में पानी की हमेशा कमी रहती थी।

दादी जी जिसे कार्य देती थीं, उसपर वो पूरा विश्वास भी रखती थीं तथा मार्गदर्शन भी करती थीं। ताकि परमात्मा के यज्ञ में कुछ भी अनुचित न हो। दादी जी की सबसे बड़ी खूबी तो ये थी कि कोई भी सरलता से उनसे मिल सकता था और सहृदयता से अपनी बातें कह सकता था और फिर यज्ञ रक्षक बन बड़े उमंग और ईमानदारी से यज्ञ के कार्य में जुट जाता था। दादी ने ज्ञानसरोवर के इस विशाल प्रोजेक्ट की ज़िम्मेवारी देने हेतु हमपर विश्वास रखा, हमें इस योग्य समझा, ये हमारा सौभाग्य है। उनके सानिध्य में रहकर उनकी कार्यप्रणाली को देखने और उनसे पालना के लम्हें आज भी जैसे साकार में नज़रों के सामने ही हैं। ऐसी हमारी दादी को पुण्य स्मृति दिवस पर गहरी भावनाओं के साथ श्रद्धासुमन ।

परमात्मा के साथ वफादार, कारोबार में ईमानदार

ओम शांति का यह महान मंत्र है। मन्त्र क्यों कहा जाता है? मन में, बुद्धि में आत्मा का ज्ञान ऐसा सहज है मैं कौन? मेरा कौन? मुझे क्या करने का है?

अभी सब याद में बैठे थे या शांत में बैठे थे, जब शांति में बैठे हैं तो क्या करते हैं? कर्मेन्द्रियाँ शांत हैं। बहुत समय के बाद आज इशारा मिला क्लास में आना है। चलते फिरते सब मिले नहीं हैं, तो यहाँ मिलने के लिए खैंच हो गई क्योंकि दिल में दिलाराम है, दिल दर्पण है, हरेक देखे मैं कौन हूँ? मेरा कौन है? मेरा पार्ट क्या है? मुखड़ा देख ले प्राणी... वृत्ति में हम सब आत्मायें हैं, बाबा के बच्चे हैं, दृष्टि में हरेक को देखते हैं कि यह किसके हैं! हरेक का पार्ट अपना है, हर साकार मुरली में बाबा की आज्ञा मिली हुई है मनमनाभव, तो इसमें सब आज्ञाकारी हैं ना! एक बाबा के सिवाए कोई नहीं, ऐसे वफादार और कारोबार में लेन-देन में ईमानदार हैं। एकनामी और एकॉनमी से रहना है। फिर एकान्त में और एकाग्रता में रहना फिर है एकता में रहना, एकाग्र चित्त होके रहना। एक मिनट अभी एक दो को देखो, ऐसे हैं सब?

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

एक दो के सामने खड़े हो करके आपस में देखो, कम से कम दो मिनट देखो। बड़ी अच्छी सीन है। कितना अच्छा लग रहा है। कितनी खुशी होती है एक दो को देखकर, किसके बच्चे हैं, कौन हैं? बड़ा अच्छा दृश्य है। पाँचों अंगुली बराबर नहीं हैं, एक छोटी है एक मोटी है, कोई छोटा है कोई बड़ा, पर मिल करके एक हो गये हैं। दृढ़ता है, यह सबकी अंगुली का सहयोग है। सबके सहयोग से योगी बन गये हैं। यह है विश्वास की अंगुली, निश्चय में विश्वास है, यह विज़डम है, एक बाबा है। पाँचों ही भिन्न-भिन्न हैं पर पाँचों एक हैं क्योंकि आपस में मिल गये ना। यह इतना ऊंचा ज्ञान होते भी कैसे सहज ज्ञान है! कुछ डिफीकल्ट नहीं है, क्योंकि एक दो का सहयोग है ना। निश्चय में बल है। किसके हैं हम?

सारी विश्व में हरेक ब्रह्माकुमारीज़ के भाई बहनों की चलन और चेहरे को देख करके बताते हैं, सम्बन्ध में रहते हुए भी देह से न्यारे हैं, तो सम्बन्ध से ऑटोमेटिक न्यारे हैं। कितना सहज है, अभी सारी विश्व के हर कोने से बाबा के बच्चे बैठे हैं। कितने देशों से आये हैं, क्या कर रहे हैं? क्यों बैठे हैं? शिवबाबा के महावाक्य ब्रह्मा मुख से सुन रहे हैं और ब्रह्माभोजन खा रहे हैं। यहाँ के भोजनालय में जाओ तो पता पड़े। भोजन बनाने वाले, खाने वाले सब अच्छे हैं।

ना अभिमान करो, ना दिलशिकस्त हो

बाबा आजकल दो बातों पर अटेन्शन खिंचवा रहे हैं - एक अभिमान नहीं हो, दूसरा दिलशिकस्त नहीं हो, क्योंकि मैजॉरिटी देखा जाता है कि वे अभिमान या दिलशिकस्त होने के कारण पुरूषार्थ जो चाहते हैं वो प्रैक्टिकल नहीं कर पाते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं, न अभिमान करो, न दिलशिकस्त हो क्योंकि हम सबने वायदा किया है कि बाबा हमारे साथ कम्बाइन्ड है। तो मेरा साथी जो कम्बाइन्ड है वो तो कमज़ोर नहीं है, वो तो सर्वशक्तिवानहै। इसलिए दिलशिकस्त तो कभी भी नहीं हो सकते हैं।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

दिलशिकस्त होने का कारण ही है - बाबा को भूलना। जब माया आती है तो वो पहले बाबा को ही भुलवा देती है। इसलिए बाबा कहते बच्चे तुम कहते हो बाबा हमारे साथ कम्बाइन्ड है लेकिन रहते हो अलग। जब मेरा बाबा कहते हो तो मेरे पर अधिकार नहीं रखते हो! जैसे शरीर क्यों नहीं भूलता? योग के टाइम भी बार-बार याद आ जाता है। शरीर का भान आ जाता है, क्यों? मेरा माना ना। तो मेरे के ऊपर हमारा अधिकार होता है, लेकिन अधिकार को भूल जाते हैं और कहते कि बाबा आपने कहा है ना, मदद करूंगा तो अभी करो ना। बाबा आपने वायदा किया है ना...जैसे रॉयल भिखारी बनके बाप से मांग रहे हैं। अरे! बच्चे कभी बाप को कहेंगे क्या कि मेरे को देंगे ना, यह करेंगे ना। वो तो कहेगा आपका तो हक है, अधिकार है। जिस टाइम पर मदद की आवश्यकता है, उस टाइम बाबा मदद नहीं देवे, यह असम्भव है।

70 साल में कितनी कुछ बातें हुई होंगी, बातें आना अच्छा है, अनुभवी बनाती हैं। लेकिन टाइम पर बाबा की मदद लेने से असम्भव बात भी सम्भव हो जाती है। मदद देने के लिए बाबा बंधा हुआ है। बाबा कभी भी मदद न देवे, यह हो ही नहीं सकता, स्वप्न तक नहीं हो सकता और बाबा कहता क्या है? बच्चे, मैं तेरे लिए ही आया हूँ, तो हमको यह नशा होना चाहिए कि मेरा बाबा है, मेरे लिए बाबा आया है। इतना नशा और निश्चय होना चाहिए और हमेशा नज़र विशेषता के ऊपर होनी चाहिए। बाबा ने इसको अपना बनाया है तो कुछ तो होगा ना। चलो, आपको उसकी विशेषता नज़र नहीं आती है, लेकिन बाबा ने विशेषता देखी तब उसने बनाया है, यह तो समझ सकते हो ना। भगवान का बच्चा है, चाहे लास्ट नम्बर है। भगवान का बच्चा क्या नहीं होगा? चलो, बिचारा परवश है, कुछ पिछले जन्मों का हिसाब कड़ा होता है जो बिचारा चुक्तू कर रहा है, तो उसके ऊपर और ही सहयोग दो ना क्योंकि मेरा भी तो भाई है ना, बहन है ना!

आत्माभ्यास से समस्याओं का निदान

राजयोग अर्थात् इस शरीर से परे अपने स्व स्मृति में रहना। एक मैं आत्मा और एक हमारा परमात्मा, इसी स्थिति में रहकर डेड साइलेन्स का अनुभव करना है। इसके लिए एकान्त की दरकार है। एकान्त में बैठ जितना-जितना हम आवाज़ से परे, संकल्प विकल्पों से परे, निराकारी स्थिति में रहें - यही आदि और अन्त मनमनाभव है। छोटे से बड़े सबको इस कर्मातीत स्टेज पर आने का पूरा-पूरा पुरूषार्थ करना है। यही मेहनत करनी है। इस पढ़ाई को जितना-जितना सभी रात को सोते, सवेरे उठते दिन भर स्मृति में रखें तो जीवन की सर्व समस्यायें समाप्त हो जाएं। इसलिए बाबा ने हमें स्मृति में आने के अनेक साधन दिये हैं। हमारी दिनचर्या स्टार्ट ही ऐसे होती। आँख खुली मैं आत्मा इस शरीर रूपी रथ पर विराजमान हूँ, पहली गुडमॉर्निंग है बाबा। और अपने को आत्मा जान उसी बाबा से मीठी-मीठी रूह-रूहान करते अथवा इस शरीर, इस संसार से परे निकलकर अपने घर में बैठ जाते। पहले रमण करते अपने घर में फिर पहुँच जाते खेल करने। खेल करते भी बाबा ने ट्रैफिक कन्ट्रोल की जो प्रेरणायें दी हैं, उसमें भी संकल्पों को कन्ट्रोल करना है। एक सेकण्ड में नीचे आना, एक सेकण्ड में आवाज़ से परे जाना। मुरलीधर की मुरली भी रोज़ सुननी है। उस समय भी यही अभ्यास हो कि मैं आत्मा कानों का आधार लेकर परमात्मा के महावाक्य सुन रही हूँ। बाबा मुख का आधार ले हमें सुना रहे हैं। ऐसे अभ्यास करते-करते जितना निराकारी स्थिति में रहेंगे उतना निर्विकारी स्वत: बन जायेंगे। निर्विकारी स्थिति बनाने का साधन है अपने को निराकारी बिन्दु आत्मा स्थिति में स्थित करना। जितना-जितना निराकारी रहेंगे तो निरहंकारी भी बनते जायेंगे। ये तीनों महावाक्य हम सबके प्रति मंत्र के रूप में बाबा के अंतिम महावाक्य हैं। इसे अपना मंत्र समझकर रखेंगे तो अन्दर में जो अनेक प्रश्न उठते कि निराकारी स्थिति कैसे बने, वह सब रोज़ के अभ्यास से समाप्त हो जायेंगे।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका